।। अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल :jstsdgh01565@gmail.com

सफलता के लिए आवश्यक है भावक्रिया – आचार्य महाप्रज्ञ

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 3 मार्च : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि सफलता पाने के लिए भावक्रिया आवश्यक है। भाव शून्य क्रिया कभी फलित नहीं होती। एकाग्र होकर भोजन करो तो पाचन अच्छा होगा और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। एकाग्रता का खंडन बीमारी पैदा करने का बड़ा कारण है। जिस समय जो कार्य करना हो उसी में रम जाना भाव क्रिया है। उन्होने भगवान पार्श्व की स्तूति में रचित कल्याण मंदिर स्तोत्र पर प्रवचन करते हुए कहा कि व्यक्ति के जीवन में कभी सार्थक और कभी निरर्थक दोनो अनुभूतियां होती है। अर्थ हीन, प्रायोजन विहीन प्रवृति करने से समस्याएं उत्पन्न होती है। प्रेक्षावान पुरुष प्रयोजन शून्य प्रवृति नहीं करता है। खाना, चलना, व्यापार करना इन सबके पीछे प्रयोजन है। बोलने का भी प्रयोजन होता है। पर बहुत से लोग प्रयोजन के बिना बोल देते हैं जो कलह का कारण बन जाता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि व्यक्ति 50 प्रतिशत बीमारियों को जानबूझकर पैदा करता है। वह मोह वेग के कारण जानता हुआ भी ऐसे कार्य कर लेता है, जिससे उसका अहित संभावित होता है। जिसके नेत्र मोह के अंधकार से ढके हुए होते हैं वह सच्चाई का पालन नहीं कर पाता है। मोह होता है तो चेतना विकृत बन जाती है। कलागृह, लड़ाई–झगड़ों का कारण मोह है। इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में गीता के 17वें अध्याय में वर्णीत मानसिक तपस्या के प्रकारों पर प्रवचन करते हुए कहा कि मन की प्रसन्नता तपस्या है। जिसके मन में विकार, भय आदि होते हैं वह सतत् मानसिक प्रसन्न नहीं रह सकता। समता का आश्रय लेने से मन की प्रसन्नता प्राप्त होती है। साधु परम प्रसन्न होते हैं। क्योंकि लाभ, अलाभ, सुख–दुःख में मध्यस्थ रहने का अभ्यास करते हैं। जो शांतिमय, वैराग्य से परिपूर्ण आनन्द का जीवन जीता है वह परम प्रसन्न रहता है। उन्होने कहा कि सौम्यता, शीतलता, गुस्सा न करना, मन का निरोध करना, तपस्या के प्रकार है।

जैन और सूफी सम्प्रदाय का सम्मेलन 6 से

जैनिज्म और सूफिज्म की समानता पर दो दिवसीय सम्मेलन राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में इण्डियन स्कॉलर फॉर्म और आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के द्वारा 6,7 मार्च को आयोजित किया जायेगा। मुम्बई के सुभाष बड़ोला के प्रायोजकत्व में आयोजित इस सम्मेलन में देश के विभिन्न क्षेत्रों से सूफी सम्प्रदाय से जुड़े विद्वान दरगाह के मुख्य और जैन सम्प्रदाय के विशेषज्ञ अनुयायी सम्मलित होगें। इससे पूर्व सूफी सम्प्रदाय के प्रतिबिधियों से चर्चा में आचार्य महाप्रज्ञ ने सर्वधर्म सम्भाव पैदा करने के लिए कार्य करने के इंगित कर चुकै हैं। उनके इंगित पर सूफी सम्प्रदाय ने सालाना उस पर प्रतिवर्ष सर्वधर्म सभा का आयोजन करने और जेन सूफी कार्यक्रम विभिन्न नगरों में आयोजन करने का निर्णय लिया है। इस तर ह का प्रवास अहिंसा के प्रचार, विश्व शांति, सौहार्द स्थापना में सहायक होगा।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक /सहसंयोजक